**DR.MALA KUMARI**
**ASSISTANT PROFESSOR (GUEST TEACHER)**
**DEPARTMENT OF PSYCHOLOGY**
**A.N.D COLLEGE SHAHPUR PATORY,SAMASTIPUR**
**B.A –PART 2 PSYCHOLOGY (HONS)**
**PAPER-4 ,UNIT-7 ,**
**THE CONTRIBUTIONS OF ROGERS**
**LECTURE – 79**

# रोजर्स का योगदान

## (THE CONTRIBUTIONS OF ROGERS)

कार्ल रोजर्स (1902- 1987) का जन्म 1902 में इलिनोइस में हुआ था |1924 में वे विसकोनसिन विश्वविद्यालय से स्नातक की उपाधि लिए |बाद में वे न्यूयार्क सिटी में यूनियन थियोलॉजिकल सेमिनरी में योगदान किये |इसके बाद वे कोलम्बिया विश्वविद्यालय चले गए और वहीं से 1931 में पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त किये |वे विभिन्न विश्वविद्यालयों जैसे –शिकागो विद्यालय ,विसकोनसिन विश्वविद्यालय तथा ओहियो स्टेट विश्वविद्यालय में शिक्षण का कार्य भी किये |इनके महत्वपूर्ण प्रकाशनों में दो का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है – कॉनशिलिंग एंड साइकोथिरापी (CONNSELLING

AND PSYCHOTHERAPHY 1942) तथा क्लायंट सेन्ट्रड थिरापी विशेष रूप से उल्लेखनीय है |

अपने चिकित्सीय अनुभवों के आधार पर उन्होंने आत्मन-सिद्धांत का विकास किया जिसे व्यक्ति-केन्द्रित सिद्धांत भी कहा जाता है |यह एक सम्पूर्णवादी सिद्धांत है |इसलिए इसे सिर्फ स्वेच्छा से छोटे-छोटे उपखंडों में बांटा जा सकता है |फिर भी इस सिद्धांत के मौलिक तथ्यों की व्याख्या निम्नांकित मुख्य चार संप्रत्ययों (CONCEPTS)के रूप में की जा सकती है-

1. जीव या प्राणी (ORGANISM)
2. आत्मन (SELF)
3. प्राणी तथा आत्मन में संबंध (RELATIONSHIP BETWEEN ORGANISM AND SELF)
4. आत्म-सिद्धी (SELF-ACTUALIZATION)

इनका वर्णन निम्नांकित है –

1. जीव या प्राणी –सामान्यतः मनोविज्ञान में प्राणी से तात्पर्य एक ऐसे जैविक जीव से होता है जो वातावरण के विभिन्न पहलुओ के प्रति अनुक्रिया करे |लेकिन रोजर्स से इस पद को थोड़ा भिन्न में लिया है |उनके लिए प्राणी से तात्पर्य

उन अनुभूतियों की सम्पूर्णता से होता है जो किसी विशेष क्षण पूरे व्यक्ति में होते रहते है |इस तरह से प्राणी को उन सभी तरह की अनुभूतियों का केंद्र माना जाता है जो हमारे शरीर के भीतर होने वाले घटनाओ के प्रत्यक्षण  से लेकर बाध्य वातावरण की घटनाओ के प्रत्यक्षण तक परिवर्तित होते रहते है |

2. आत्मन – रोजर्स के लिए आत्मन से तात्पर्य अनुभूतियों की सम्पूर्णता से होती है |इस तरह की सम्पूर्णता में चेतन तथा अचेतन दोनों तरह की अनुभूतियाँ सम्मिलित होती है |अनुभूतियों के इस सम्पूर्ण योग को प्रत्यक्षणात्मक क्षेत्र या प्रतिभासिक क्षेत्र कहा जाता है |प्रतिभासिक क्षेत्र की अनुभूतियाँ भीतर की अनुभूतियाँ होती है जिसके बारे में परानुभूतीय अनुमान के अलावा अन्य किसी विधि से ज्ञान प्राप्त नहीं किया जा सकता है हालाँकि ऐसी अनुभूतियाँ जीव या प्राणी की आतंरिक अनुभूति होती है |इसके स्रोत आतंरिक या बाध्य या दोनों हो सकते है |

   रोजर्स का मत है की किसी व्यक्ति में आत्मन नहीं होता है बल्कि आत्मन में ही सम्पूर्ण प्राणी या जीव सम्मिलित होता है |उन्होंने आत्मन के दो उपसंप्रत्यय बतलाये है –

(i) आत्म संप्रत्यय (self-concept) तथा

(ii) आदर्शवादी आत्मन (ideal self)

TO BE CONTINUED